THE PROBLEM OF THE MANGO TREE

AKBAR BIRBAL TALE

आम के पेड़ की समस्या

अकबर बीरबल के किस्से

The Problem of the Mango Tree

आम के पेड़ की समस्या

अकबर बीरबल के किस्से

Tales of Akbar & Birbal
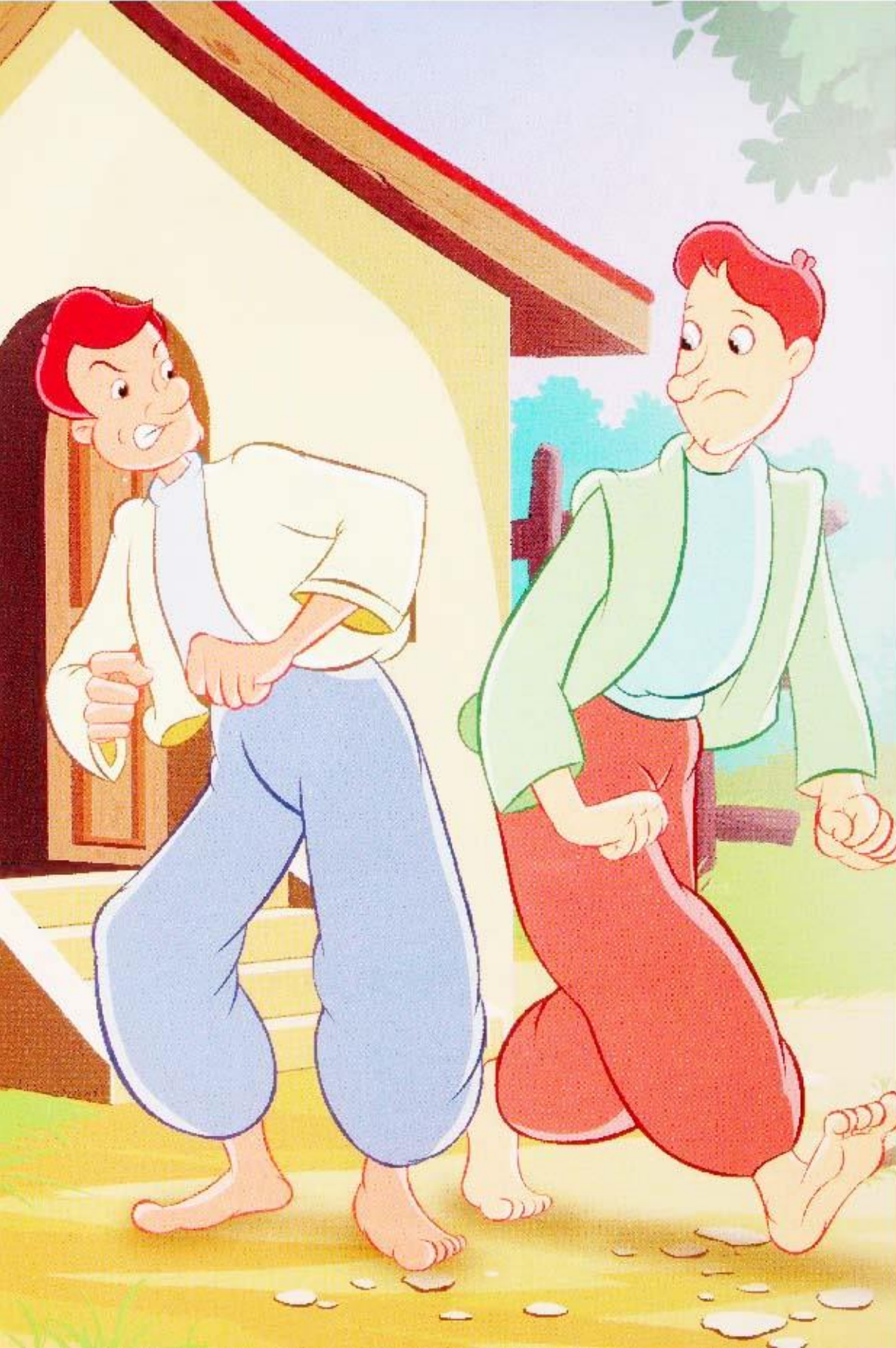
Charan and Mahesh were two citizens in Emperor Akbar's kingdom. They were neighbours but they used to always fight over the smallest of things.

सम्राट अकबर के राज्य में चरण और महेश नाम के दो नागरिक रहते थे. वे पड़ोसी थे लेकिन छोटी-छोटी बातों पर हमेशा झगड़ते रहते थे.

Once, they began arguing over a mango tree that was between their houses. Each claimed that the tree was his.

Finally they took their troubles to Emperor Akbar.

एक बार, वे अपने घरों के बीच स्थित एक आम के पेड़ पर लड़ने लगे. प्रत्येक ने दावा किया कि पेड़ उसका था.

अंततः वे अपनी समस्या बादशाह अकबर के पास लेकर गये.

However, even after listening to both men, neither Akbar nor Birbal was able to say who owned the tree.

So Birbal said, "You both may go back home now. I need to think this over."

दोनों व्यक्तियों की बात सुनने के बाद भी, न तो अकबर और न ही बीरबल यह बता पाए कि पेड़ का मालिक कौन था.

फिर बीरबल ने कहा, "अच्छा अब आप दोनों घर वापस जाएं. मुझे इस मुद्दे पर विचार करना होगा."
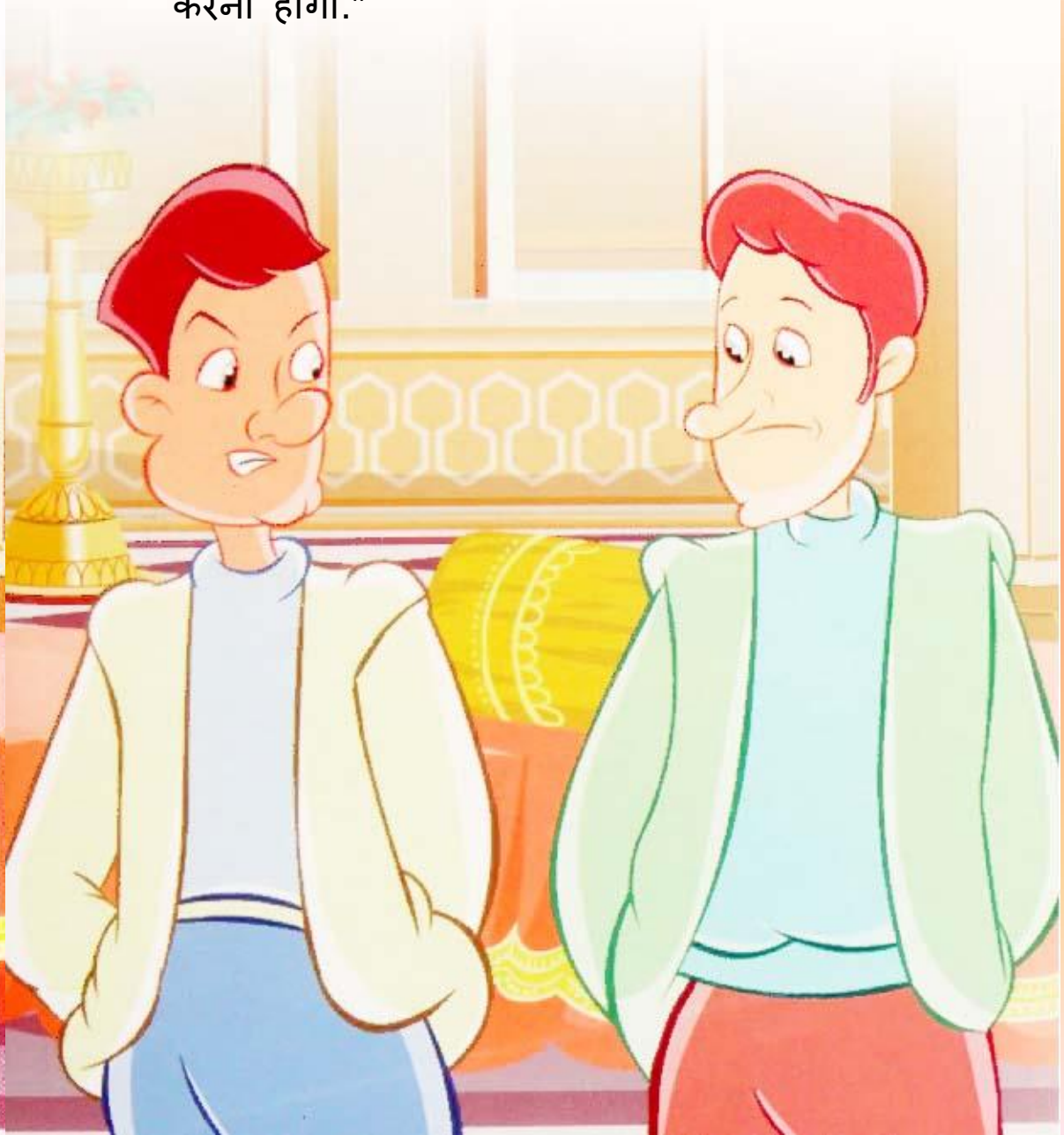
Soon after the men left, Birbal called his servant and ordered, "Go to Charan and Mahesh and tell them that thieves are stealing mangoes from the tree."

The servant obeyed immediately.

उन दोनों के जाने के तुरंत बाद, बीरबल ने अपने नौकर को बुलाया और उसे आदेश दिया, "चरण और महेश के पास जाओ और उनसे कहो कि चोर उनके पेड़ से आम चुरा रहे हैं."

नौकर ने तुरन्त बीरबल की आज्ञा का पालन किया.

As soon as Charan heard the news, he said, "Oh! Thieves are always stealing from the tree. I will deal with them later, I am busy now."

खबर सुनते ही चरण ने कहा, "ठीक है, चोर हमेशा पेड़ से चोरी करते रहते हैं. मैं उनसे बाद में निपटूंगा. अभी मैं व्यस्त हूं."

On the other hand, when Mahesh heard the servant, he quickly grabbed a stick and ran to chase away the thieves.

उधर, जब महेश ने नौकर की बात सुनी तो वह झट से लाठी लेकर चोरों को भगाने के लिए दौड़ा.

The servant returned to Birbal and reported exactly what had happened.

Birbal looked thoughtful. "I will meet both the men again tomorrow," he said.

नौकर बीरबल के पास लौटकर आया और जो कुछ हुआ वो उसने बीरबल को बताया.

बीरबल विचारमग्न दिखे. उन्होंने कहा, "मैं कल फिर उन दोनों आदमियों से मिलूंगा."
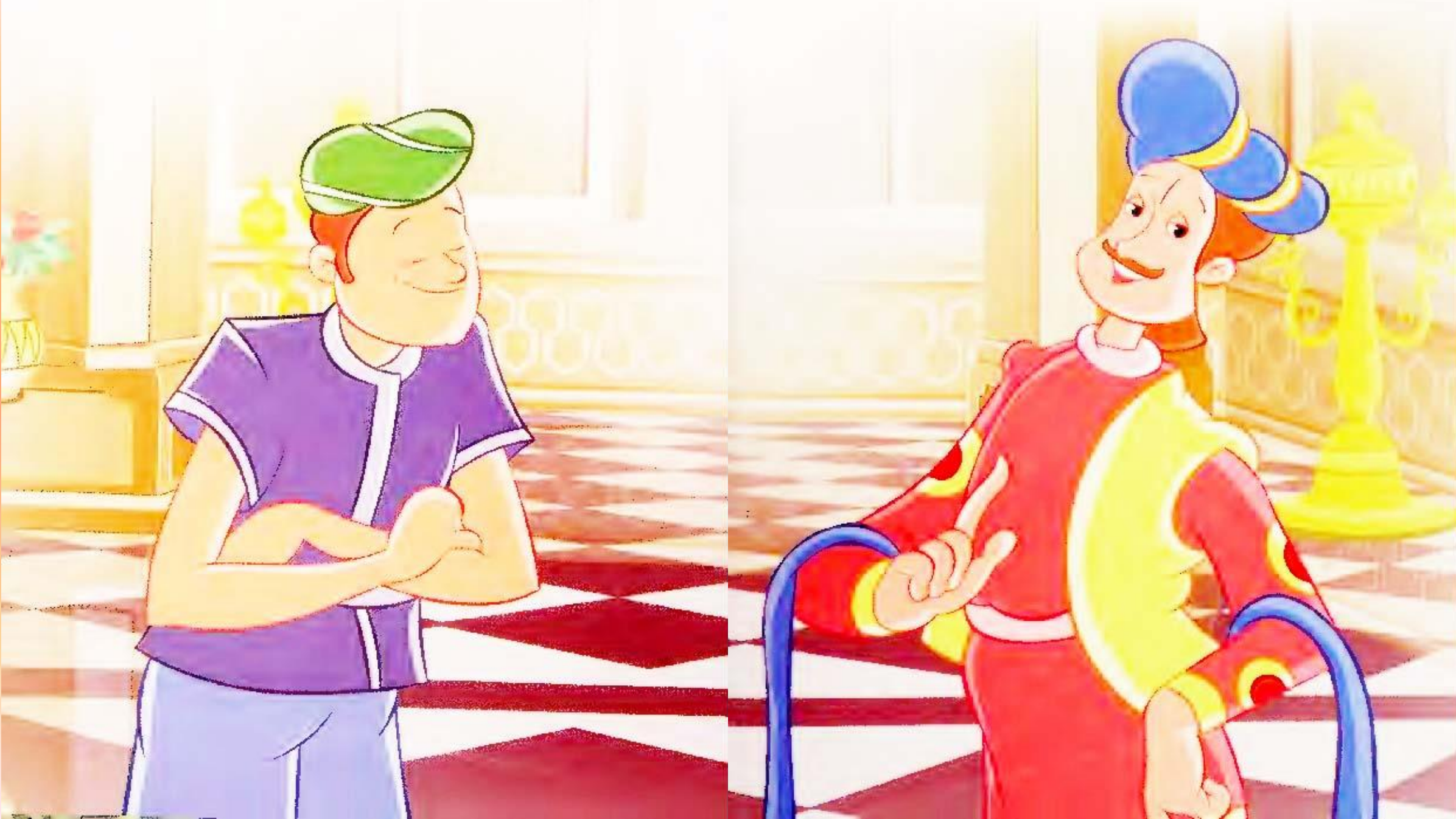
The next day, Charan and Mahesh returned to court.

Birbal said to them, "I cannot decide whose tree it is. I think the tree should be cut. The wood from the tree can be equally shared by both of you."
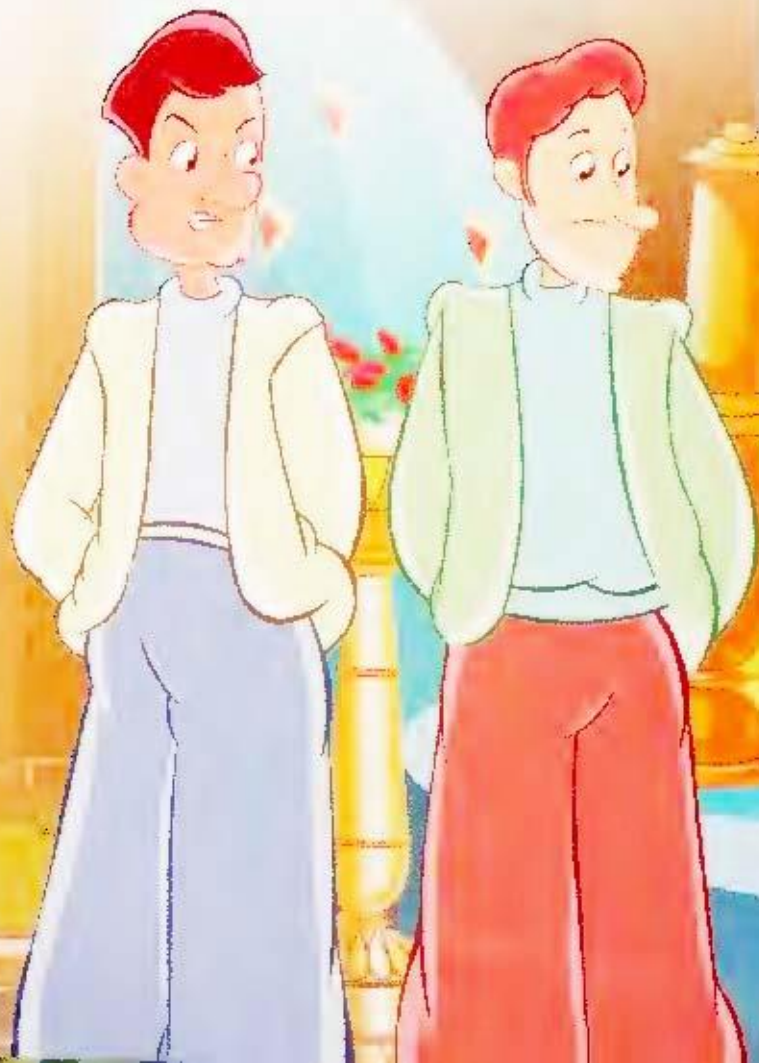
अगले दिन, चरण और महेश अदालत में लौटकर आए.

बीरबल ने उनसे कहा, "मैं तय नहीं कर पाया हूँ कि यह पेड़ किसका है. मुझे लगता है कि हम पेड़ काट देंगे और फिर आप लोग पेड़ की लकड़ी को आपस में बराबर-बराबर बाँट लें."

Charan looked pleased. He thought of all the money he could earn from selling the wood.

"Yes, that is the only thing left to do now," he agreed.

चरण प्रसन्न दिखा. उसने लकड़ी बेचने से मिलने वाली ढेर सारी रकम के बारे में सोचा.

"हां, अब हमें यही करना चाहिए," वो सहमत हुआ.
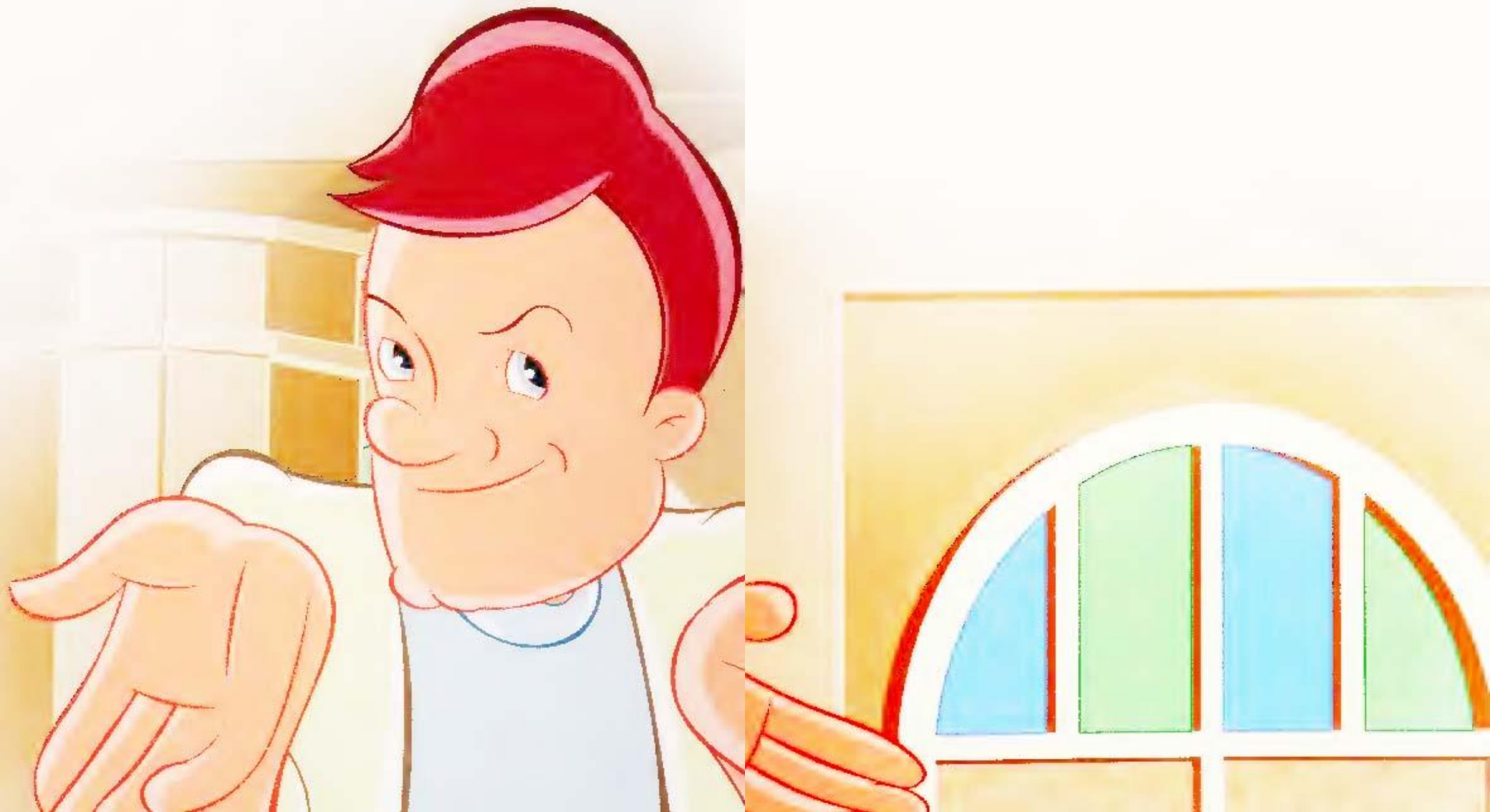
Mahesh looked horrified. "No! Please don't cut the tree!" he pleaded, "I have looked after that tree for so many years."

He continued, "I cannot see it being chopped down. I don't want the tree, please give it to Charan."

महेश भयभीत होकर बोला, "नहीं! कृपया पेड़ मत काटो!" उसने विनती की, "मैंने इतने वर्षों तक उस पेड़ की देखभाल की है."

उसने आगे कहा, "मैं उस पेड़ को कटते हुए नहीं देख सकता. मुझे पेड़ नहीं चाहिए, कृपया वो पेड़ चरण को दे दें."
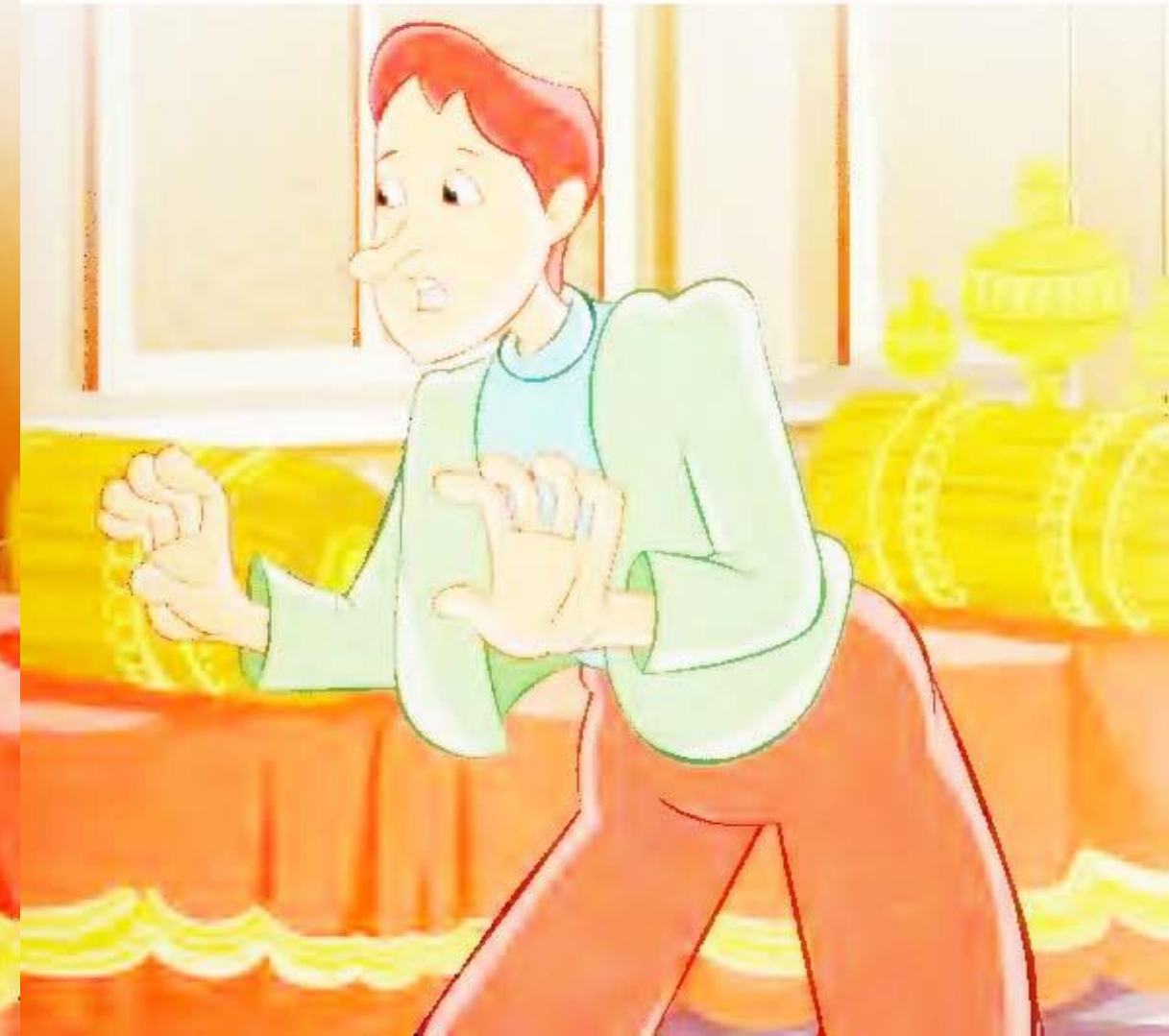
Birbal now knew for sure that Mahesh was the real owner of the tree.

"I can see how much you care for the tree, Mahesh. It is rightfully yours," he said.

He then explained to the court what had happened the day before as well.

बीरबल को अब निश्चित रूप से पता चल गया कि महेश ही पेड़ का असली मालिक था.

बीरबल ने कहा, "मैं देख सकता हूं कि तुम पेड़ की कितनी परवाह करते हो, महेश. उस पेड़ पर पूरा हक तुम्हारा है."

इसके बाद बीरबल ने अदालत को बताया कि पहले दिन क्या हुआ था.

It was decided that the tree belonged to Mahesh.

Everybody in the court, including Akbar was impressed with the clever way in which Birbal had solved the problem.

अदालत ने तय किया कि पेड़ महेश का था.

बीरबल ने जिस चतुराई से समस्या का समाधान किया उससे अकबर सहित दरबार में हर कोई प्रभावित हुआ.

अंत